नागरिक विद्रोह के पूर्व बिहार में सृजनात्मक आन्दोलन

डॉ. अजित कुमार

आरंभ में ईस्ट इंडिया कंपनी की नीति भारत के सामाजिक मामलों में अहस्तक्षेप की नीति थी। मौजूदा व्यवस्थाओं को जारी रखने की माँग करनेवाली व्यावहारिकता के साथ–साथ परंपरागत भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान का एक भाव भी था, जो अपने आपको वॉरेन हेस्टिंग्ज की 'प्राच्यवाद' की नीति में व्यक्त करता था। अतः संस्कृत, फारसी भाषाओं के अध्ययन के माध्यम से बहुत कुछ जानकारियाँ मिलती हैं। एक विद्वान ने ठीक ही कहा है कि सामाजिक, धार्मिक सुधार आंदोलन और बहावी आन्दोलन के माध्यम से बिहार में पुनर्जागरण की संस्कृति पैदा की। जिससे भारतीय राष्ट्रवाद परिपक्वता की ओर जा रही थी और इसी से कई सृजनात्मक विधाओं का उदय हुआ जो 1857 के नागरिक विद्रोह के लिए एक नयी दिशा प्रदान की। भारतीय संस्कृति के बारे में कुछ सीखने का प्रयास करना तथा शान संबंधी विषयों में उस ज्ञान का उपयोग करना था। बंगाल की एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता मदरसा और बनारस के संस्कृत कॉलेज की स्थापना इसी प्रयास का परिणाम थी। प्रजा यानी अधीनस्थ जनता, उसके सामाजिक रीति–रिवाजों, तौर–तरीकों और संहिताओं संबंधी ज्ञान को शासन की स्थायी संस्थाओं के विकास की अनिवार्य शर्त समझा जाता था। इस तरह हेस्टिंग्ज की विजित जनता पर उसी के ढंग से शासन करने और आंग्लीकरण का विरोध करने की नीति प्राच्यवादी वैचारिक प्राथमिकताओं को और राजनीतिक व्यावहारिकता को भी प्रतिबिंबित करती थी।